अंतर्राष्ट्रीय संबंधी

27.05.17

- किसी राष्ट्र के Interest (राष्ट्रीय हित)

- भौगोलिक सुरक्षा बनाये रखना (अखण्डता)
  जिस मुद्दे पर कोई भी राज्य समझौता करने को तैयार नहीं होता
- देश व्यवस्था के साथ क्षमा होगी
- आर्थिक व्यवस्था को सुदृढ़ बनाना (Economy)

भारत
- भू-भाग
- संस्कृति
- राजनीतिक व्यवस्था
- आर्थिक विकास

- दूतावास (Embassy) (सिर्फ 01)
  ↳ उच्चायोग (कई देशों के पद नाम) (Commonwealth Nation) (High Commision)
- वाणिज्यिक दूतावास (Consulate) (कई सारे)

- दो देशों के बीच सम्बन्ध निर्माण में यह देखा जाता है कि दोनों देशों के बीच संघर्ष की तुलना में सहयोग की मात्रा ज्यादा होनी चाहिए।

देशों के बीच सम्बन्ध

① आर्थिक सम्बन्ध

- द्विपक्षीय व्यापार
- उस देश के साथ निवेश
- तेल ⇌ गैस
- मुक्त व्यापार का समझौता
- समग्र आर्थिक समझौता (CEPA)
  (Comme. Eco. Parternship Agreement)

② राजनीतिक सम्बन्ध

- कश्मीर मुद्दे पर भारत का समर्थन
- सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता के लिए भारत का समर्थन
- भारतीय लोकतंत्र का समर्थन
- आतंकवाद के मुद्दे पर भारत का समर्थन

③ रक्षा सम्बन्ध

- हथियारों का आदान-प्रदान
- सैनिकों का प्रशिक्षण
- संयुक्त सैनिक अभ्यास
- हथियारों का साझा उत्पादन

④ सामरिक सम्बन्ध

- सभी सैनिक सम्बन्ध, सामरिक सम्बन्ध के भाग
- उच्च एवं संवेदनशील तकनीकि (NuClear, Space)
- रुपया के लेन-देन का समझौता
- मित्र देशों के सुरक्षा के लिए साथ में

⑤ सांस्कृतिक संबन्ध

- त्योहारों का आयोजन
- भाषा का अध्ययन
- संस्कृति कर्मियों का आदान-प्रदान
- शैक्षिक सहयोग

○ निष्कर्ष

○ विश्व के मित्र देशों के बीच इन सभी आयामों में सहयोग होगा उनके बीच के सम्बन्ध अधिक मधुर व मित्रतापूर्ण कहलायेंगे। परन्तु ऐसा भी सम्भव है कि दो देश के बीच आर्थिक सम्बन्ध अत्यधिक प्रभावशाली हों परन्तु सामरिक सम्बन्ध अनुपस्थित हों, ऐसे देशों के बीच के सम्बन्ध को Partnership के रूप में व्यक्त किया जायेगा तथा जिन देशों के बीच सामरिक सम्बन्ध महत्वपूर्ण होंगे उन्हें मित्र का दर्जा दिया जायेगा।

○ Ally (मित्र)
○ Partner (सहयोगी)
○ Aliance (गठबंधन)

○ स्वतंत्रता से लेकर आज तक भारत का किसी भी संगठन के साथ सैनिक गठबंधन नहीं हुआ।

○ जीरो सम गेम (Zero Sum Game)

○ राज्यों के बीच में विद्यमान विशुद्ध संघर्ष की स्थिति, जहां एक पक्ष की विजय का अभिप्राय दूसरे पक्ष की पराजय है।

○ अतः राज्यों के बीच सहयोग की सम्भावना नहीं होती बल्कि संघर्ष विद्यमान होता है।

○ इस स्थिति में एक के लाभ का अभिप्राय दूसरे की पराजय है। अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में विद्यमान युद्ध की व्याख्या के लिए इस विचार का प्रयोग किया जाता है।

- Cost - Benefit Analysis
- नान जीरो सम गेम
  (Non-zero Sum Game)

- राज्यों के बीच संघर्ष से सभी का नुकसान होगा जबकि सहयोग से साझे लाभ प्राप्त किये जा सकते हैं।
- वर्तमान उदारीकरण, भूमण्डलीकरण के दौर में आर्थिक सहयोग सभी के लिए लाभदायी है। पर्यावरण संरक्षण के लिए सभी देशों के बीच सहयोग से साझे लाभ सम्भव है।

- भू - राजनीति
  (Geo - Politics)

- आकार
- अवस्थिति

ⓐ बफर राज्य (दो महाशक्तियों के बीच स्थित एक छोटा राज्य; नेपाल, भूटान)

ⓑ भू - आबद्ध राज्य
(Land locked State)

ऐसा राज्य जिसकी कोई भी सीमा समुद्र से नहीं मिलती बल्कि वह अन्य राज्यों से घिरा हुआ है। (नेपाल, भूटान, अफगानिस्तान, मध्य एशियाई देश)

० शक्तिशाली राज्यों के प्रकार

० हार्ड पावर (Hard Power)

राज्य की सैन्य शक्ति को हार्ड पावर कहा जाता है। और अमेरिका के पास विश्व की सबसे बड़ी सैन्य शक्ति है। उ० कोरिया व पाकिस्तान जैसे देश भी अपनी सैन्य क्षमता को ज्यादा से ज्यादा बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं परन्तु किसी राज्य के शक्तिशाली होने के लिए हार्ड पावर के साथ-2 Soft Power होना भी आवश्यक है। जिसका अभिप्राय वैचारिक, सांस्कृतिक, तकनीकि व आर्थिक शक्ति है।

सॉफ्ट पावर ~~के बढ़ाया जाता~~ से हार्ड पावर बढ़ायी जा सकती है और हार्ड पावर की सहायता से सॉफ्ट पावर अर्जित किया जा सकता है।

० शक्ति सन्तुलन (Balance of Power)

(शक्ति का सन्तुलन:)

- ० दो ध्रुवीय शक्ति सन्तुलन - दो केन्द्र
  eg. USA ⟷ USSR
- ० बहुध्रुवीय शक्ति सन्तुलन - अनेक केन्द्र
  eg.→ USA, चीन, रूस, ब्रिटेन
- ० एक ध्रुवीय शक्ति सन्तुलन - एक केन्द्र

० राज्यों के बीच विषमता शक्ति संघर्ष, प्रतिस्पर्धा को ही शक्ति संतुलन का नाम दिया जाता है।

○ भारत की विदेश नीति का विकास

- विश्व की सर्वाधिक प्राचीन परम्परा जो वर्तमान में विश्व अर्थव्यवस्था के केन्द्र के रूप में उभर रहा है।
- विश्व की प्रमुख सैनिक क्षमता वाला देश
- उपमहाद्वीपीय आकार का देश तथा विश्व की दूसरी सबसे बड़ी जनसंख्या।
- विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश, जिसका अर्थ है भारत एक महाशक्ति है और भारत G-20 का सदस्य है। NSG की सदस्यता के लिए विश्व की अधिकांश महाशक्तियां भारत का समर्थन कर रही हैं। और सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता के लिए भारत का दावा अत्यधिक वास्तविक है।

स्वतंत्रता के बाद भारत में एक महाशक्ति बनने की सम्भावना थी वर्तमान में भारत का उभार महाशक्ति के रूप में हो चुका है

○ विदेश नीति (foreign Policy)

राज्य के द्वारा अपनी आन्तरिक आवश्यकतायें पूर्ण करने के लिए अन्य देशों के साथ व संगठनों के साथ निर्मित सम्बन्ध

घरेलू आवश्यकता

राष्ट्रीय हित, जिसके अनुसार देश की सुरक्षा बनाये रखना, आर्थिक विकास सुनिश्चित करना व राजनीतिक स्थायित्व निर्मित करने के लिए स्थापित सम्बन्ध

- ऐतिहासिक विकास
- आदर्शवादी विदेश नीति
- नेहरू की नीति

घरेलू परिस्थिति

वैश्विक परिस्थिति

USA → USSR
(NATO) (WARSA)

तकनीक + पैसा

सार्वजनिक उपक्रमों के लिए पैसा

① स्वतंत्र विदेश नीति अपनाते हुए भारत ने संयुक्त राज्य अमेरिका एवं सोवियत संघ नामक दोनों महाशक्तियों के साथ मित्रतापूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने पर बल दिया।

② नेहरू के द्वारा संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ सम्बन्ध बनाकर आर्थिक तकनीकि सहायता प्राप्त की गयी। 1950-60 के दशक में भारत को सबसे बड़ी मात्रा में आर्थिक सहायता देने वाला देश सं० रा० अ० था। व सोवियत संघ के साथ सुदृढ़ संबंध निर्मित करते हुए भारत ने सार्वजनिक उपक्रमों की स्थापना के लिए आर्थिक सहायता प्राप्त की गयी।

③ स्वतंत्र भारत ने सार्वजनिक उपक्रमों की प्राथमिकता अथवा मिश्रित अर्थव्यवस्था का सिद्धान्त अपनाया गया। और यह आर्थिक प्रणाली पूंजीवाद और साम्यवाद के बीच एक मध्यम मार्ग था।

- नेहरू ने एशिया - अफ्रीका के बीच एकता के बीच पर बल प्रदान किया इसीलिए चीन के साथ बेहतर सम्बन्धों का पक्ष लिया।
- उन्होंने साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद, रंगभेद नीति तथा परमाणु हथियारों के प्रसार का विरोध किया। तथा तीसरी दुनिया के देशों के बीच एकता पर बल प्रदान किया।
- उन्होंने शान्तिपूर्ण सह अस्तित्व, पंचशील (शान्ति के सिद्धान्त) एवं संयुक्त राष्ट्र के आदर्शों के आधार पर विदेश नीति का संचालन किया।
- नेहरू के द्वारा विदेश नीति में आदर्शवादी, नैतिकतावादी, सिद्धान्तों का प्रयोग किया गया परन्तु इसके द्वारा राष्ट्रीय हितों को पूर्ण करने का प्रयास किया गया। और उनकी नीति भारत की तात्कालीन घरेलू परिस्थितियों के अनुसार सर्वाधिक बेहतर थी और उन्होंने गुट निरपेक्ष विदेश नीति के रूप में विश्व को एक नया विचार व विकल्प भी दिया।

- विदेश नीति के दूसरे चरण का विकास

- 1962 - चीन का आक्रमण
- 1964 - चीन ने परमाणु परीक्षण की घोषणा
- 1965 - पाकिस्तान का आक्रमण
- 1971 - USA - China की मित्रता

- यथार्थवादी विदेश नीति

- इंदिरा गाँधी ने राष्ट्रीय सुरक्षा, सैन्य आधुनिकीकरण पर अत्यधिक बल प्रदान किया सेनाओं के आकार में कई गुना वृद्धि कर दी गयी। और 1971 में भारत - सोवियत संघ के बीच शान्ति व मित्रता का समझौता हुआ जिसमें एक दूसरे के बीच सामरिक सहयोग

पर स्पष्ट बल दिया गया था और भारत सोवियत संघ मित्रता के कारण भारत-अमेरिका के बीच संबंधों में स्वाभाविक दूरी बढ़ गयी बल्कि अमेरिका भारत का विरोधी हो गया।

- भारत-सोवियत संघ की मित्रता अमेरिका-चीन-पाकिस्तान के त्रिकोण का सामना करने के लिए आवश्यक था। 1974 में भारत के द्वारा शान्तिपूर्ण परमाणु परीक्षण किया गया।
- 1971 में भारत ने पाकिस्तान को पराजित किया।
- यह उल्लेखनीय है कि इंदिरा गांधी ने आदर्शवादी विदेश नीति को यथार्थवादी बना दिया परन्तु उन्होंने आर्थिक नीतियों में कोई परिवर्तन नहीं किया व गुटनिरपेक्ष विदेश नीति को भी आगे बढ़ाया। परन्तु पड़ोसी के साथ बराबरी का व्यवहार अपनाया नहीं गया। (Tit for Tate)

- विदेश नीति का तीसरा चरण

आन्तरिक परिस्थिति

- सार्वजनिक उद्यम घाटे में
- G.D.P. पर भुगतान संतुलन का संकट
- 1989 में लोकसभा में किसी एक दल को बहुमत नहीं मिल पाया।

बाह्य वातावरण

- 1991 में सोवियत संघ का विघटन
- रूस ने अमेरिका का मित्र
- 199

- 1991 के बाद विदेश नीति में होने वाले परिवर्तन

पहली बार सार्वजनिक उद्यमों की प्राथमिकता की आर्थिक प्रणाली को परिवर्तित करते हुए उदारीकरण एवं निजीकरण की नीति अपनायी गयी।

- निवेश को आकर्षित करने के लिए तथा व्यापार और अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए पूर्व की ओर देखो की नीति अपनायी गयी जिसे वर्तमान में Act East भी कहा जाता है।

Note - यथार्थवाद + आदर्शवाद = Pragmatic (प्रैग्मेटिक)
(Realistic) (Idealistic)

- भारत के द्वारा विदेश नीति में क्रियावाद के बजाए प्रैग्मेटिक नीति अपनायी गयी जिसके अन्तर्गत अमेरिका के साथ सम्बन्ध सुदृढ़ करने पर अत्यधिक महत्व दिया गया तथा इजराइल के साथ 1992 में कूटनीतिक सम्बन्धों की स्थापना की गयी।
और म्यांमार की सैनिक सरकार के साथ भी सम्बन्ध बेहतर करने का प्रयास किया गया।

गुजराल सिद्धान्त

- विदेश मन्त्री इन्द्र कुमार गुजराल के द्वारा 1996 में पड़ोसी देशों के साथ सम्बन्ध बेहतर करने के लिए निम्न उपायों पर बल दिया-
- "छोटे पड़ोसी देशों के साथ बराबरी का व्यवहार नहीं करना चाहिए बल्कि, उन्हें एकतरफा छूट देना चाहिए तथा उनके साथ सद्भावपूर्ण व विश्वासपूर्ण सम्बन्धों पर बल देना चाहिए।"
- पड़ोसियों के साथ विद्यमान सीमा विवाद शान्तिपूर्ण व द्विपक्षीय रूप में हल होने चाहिए।
- दक्षिण एशिया का कोई भी देश अपनी भूमि का प्रयोग दूसरे देश के विरुद्ध नहीं करेगा।

• किसी भी देश के द्वारा दूसरे के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं किया जायेगा।

• सभी पड़ोसी एक दूसरे की क्षेत्रीय एकता व अखण्डता का सम्मान करेंगे।

• भारत की पड़ोसी देशों के साथ सम्बन्ध निर्माण में एक निर्णायक परिवर्तन माना जाता है, जिसमें छोटे पड़ोसी देशों को एकतरफा तकनीकि आर्थिक छूट दी जायेगी, यह सुरक्षा व आतंकवाद के मामले में उपलब्ध नहीं होगी।

• दक्षिण एशिया में भारत की अवस्थिति, आकार, जनसंख्या व शक्ति की दृष्टि से निर्णायक है और नेपाल, भूटान, श्रीलंका, बाँग्लादेश जैसे छोटे पड़ोसी देशों को एकतरफा छूट देकर निम्न लाभ प्राप्त किये जा सकते हैं –

ⓐ व्यापार में वृद्धि

ⓑ पड़ोस में सीमाएं शान्त होने से भारत आर्थिक विकास को आगे बढ़ाने में सक्षम होगा।

ⓒ छोटे पड़ोसी देशों में भारत के प्रति बढ़ते विश्वास से चीन का दक्षिण एशिया में प्रभाव भी कम होगा।

• इस सिद्धान्त में यह भी कहा गया है कि सभी पड़ोसी देशों के साथ विवादों का शान्तिपूर्ण समाधान किया जायेगा।

• गुजराल सिद्धान्त में छोटे पड़ोसी देशों के साथ समान संप्रभुता का सम्मान किया गया है और वर्तमान प्रधानमंत्री द्वारा पड़ोसी पहले (Neigh. first) की नीति के द्वारा गुजराल सिद्धान्त को प्रभावी बनाया जा रहा है।

वर्तमान में श्रीलंका, बांग्लादेश, अफ०, नेपाल, भूटान के साथ सम्बन्ध लगातार सुदृढ़ हो रहे हैं, यद्यपि चीन व पाकिस्तान के साथ लगातार तनाव बना हुआ है जो विदेश नीति की एक प्रमुख चुनौती है।

○ गुजराल सिद्धान्त की आलोचना

- Proactive foreign Policy
- Reactive foreign Policy
- गुजराल सिद्धान्त कोई नया विचार नहीं है क्योंकि इंदिरा गांधी के द्वारा भी श्रीलंका बांग्लादेश जैसे पड़ोसियों को भी एकतरफा छूट दी गयी थी।
- छोटे पड़ोसियों को एकतरफा छूट देना सम्बन्ध बेहतर होने की गारंटी नहीं है।

○ निष्कर्ष

छोटे पड़ोसियों को एकतरफा छूट प्रोएक्टिव विदेश नीति का उदाहरण है और इसके लाभ ज्यादा हैं, व राष्ट्रीय हितों के लिए सकारात्मक है।

○ परमाणु क्षमता का विकास

○ 1998 में भारत के द्वारा परमाणु हथियारों का विस्फोट किया गया और विश्वसनीय न्यूनतम परमाणु प्रतिरोधक क्षमता के विकास (Credible minimum Nuclear Deterrence) पर बल दिया गया।

○ 1998 में परमाणु परीक्षण भारतीय विदेश नीति में एक गुणात्मक परिवर्तन था और यह क्रियात्मक कदम था और परमाणु परीक्षण

के बाद भारत सरकार परमाणु नीति की घोषणा की गयी जिसकी विशेषतायें निम्न हैं -

- विश्वसनीय न्यूनतम परमाणु प्रतिरोधक क्षमता का विकास
- पहले प्रयोग न करने की नीति। (No first use)
- परमाणु हथियारों के प्रयोग का अधिकार प्रधानमंत्री के हाथों में होगा।
- किसी गैर परमाणु शक्ति सम्पन्न देश पर हमला नहीं किया जायेगा यद्यपि इसमें संशोधन करते हुए यह कहा गया है कि यदि भारत पर रासायनिक अथवा जैविक हथियारों से हमला हुआ तो भारत परमाणु हथियारों के हमले का विकल्प खुला रखेगा।
- भारत के द्वारा भविष्य में कोई परमाणु परीक्षण नहीं किया जायेगा परन्तु भारत अपनी अनुसंधान कार्य को जारी रखेगा।
- यदि पूरे विश्व के द्वारा परमाणु हथियार समाप्त करने की पहल होगी तो भारत भी अपने परमाणु हथियार समाप्त कर देगा।

- No first Use पर विवाद
- आलोचकों का कहना है कि पहले न प्रयोग करने की नीति तकनीकि रूप में व्यावहारिक नहीं है क्योंकि आक्रमण करने वाला राष्ट्र भारत को आक्रमण करने का अवसर नहीं देगा।
- पाकिस्तान के पास भी परमाणु हथियार है व पाकिस्तान पहले प्रयोग की नीति का समर्थक रहा है।
- अमेरिका व रूस जैसे महाशक्तियों का भी इस सिद्धान्त में विश्वास नहीं है।

- यह नीति उपयोगी है क्योंकि चीन अभी भी इस नीति का समर्थक है, और इस नीति में बदलाव भारत-चीन के बीच अविश्वास बढ़ाने में उत्तरदायी होगा।
- यह नीति भारत के उत्तरदायित्व पूर्ण व्यवहार के अनुरूप है, क्योंकि परमाणु सामग्री के अवैध आदान प्रदान में भारत कभी शामिल नहीं रहा तथा भारत के परमाणु हथियार आत्मरक्षा के लिए हैं आक्रमण के लिये नहीं।
- आवश्यक परिस्थितियों के दौरान किसी भी नीति या सिद्धान्त को बदला जा सकता है क्योंकि राष्ट्रीय सुरक्षा किसी भी देश के लिए सर्वोपरि है।

NSG (London Club)

- स्थापना - 1975
- PNE- भारत - 1974
- वर्तमान में NSG के 48 सदस्य हैं जिनके पास परमाणु अनुसंधान क्षमता अथवा परमाणु ईंधन है। NSG के सदस्य किसी अन्य देश को परमाणु तकनीकि एवं ईंधन प्रदान करेंगे, बशर्ते -
  - (a) उसने परमाणु अप्रसार संधि पर हस्ताक्षर कर दिया हो
  - (b) परमाणु सामग्री का शान्तिपूर्ण प्रयोग करेगा।
- भारत - अमेरिका सिविल परमाणु समझौते 2008 के बाद NSG के द्वारा भारत को एक विशेष छूट (WAIVER) दी गयी और परमाणु तकनीकि व ईंधन की सहायता आरम्भ कर दी गयी। वर्तमान में भारत NSG के पूर्ण सदस्यता के लिए आवेदन कर चुका है

NSG में शामिल होने के लाभ

- वर्तमान में परमाणु तकनीकि एवं ईंधन प्राप्त करने के लिए अलग-2 देशों के साथ पृथक समझौते करने पड़ रहे हैं। जबकि NSG में शामिल होकर एक साथ भारत को 48 देशों से परमाणु तकनीकि व ईंधन प्राप्त होगा, इस समूह में शामिल होने से भारत को महाशक्ति का औपचारिक दर्जा भी प्राप्त हो जायेगा। क्योंकि शक्तिशाली देशों का एक समूह है। इसके साथ NSG के प्रावधानों में होने वाले भविष्य के परिवर्तन में भी भारत की भूमिका निर्णायक होगी।

समस्या

- NSG का निर्णय आम सहमति से लिया जाता है, इसीलिए चीन भारत के सदस्यता के दावे का समर्थन नहीं कर रहा है और चीन के अनुसार जिन देशों ने NPT पर हस्ताक्षर नहीं किया है उनके सदस्यता की प्रक्रिया निर्धारित होनी चाहिए।
- चीन का उद्देश्य परमाणु अप्रसार को बढ़ावा देना नहीं है बल्कि भारत की बढ़ती शक्ति को संतुलित करना है व चीन का यह भी मानना है कि भारत की सदस्यता के बाद पाकिस्तान की सदस्यता लटकी भी पड़ जायेगा। क्योंकि NSG के निर्णय आम सहमति से होते हैं।
- NSG के सदस्यों में आस्ट्रिया, आयरलैण्ड, स्वि० परमाणु प्रसार के घोर विरोधी हैं इसलिए किसी भी देश को अतिरिक्त छूट देने का बिल्कुल समर्थन नहीं करते।
- NSG के बड़े व प्रभावशाली देशों ने (अमेरिका, फ्रांस, ब्रिटेन, आस्ट्रे० जापान जैसे देश) भारत की सदस्यता के समर्थक हैं

o निष्कर्ष

NSG में भारत की सदस्यता का दावा भारतीय विदेश नीति में नये परिवर्तन का उदाहरण है जिसके द्वारा भारत स्वयं को महाशक्ति के रूप में स्थापित करने का प्रयास कर रहा है यद्यपि वैश्विक शक्ति सन्तुलन के कारण भारत को फिलहाल सदस्यता प्राप्त नहीं हुयी है।

o वर्तमान सरकार की विदेश नीति

o विदेश नीति राष्ट्रीय हितों को पूर्ण करने का एक साधन है, इसलिए सरकार के परिवर्तन के साथ राष्ट्रीय हितों में बदलाव आवश्यक नहीं है।

CHANGE

o 16वें लोकसभा चुनाव के बाद न केवल लोकसभा में एक दल का बहुमत स्थापित हुआ बल्कि शक्तिशाली प्रधानमंत्री का भी उदय हुआ। इसलिए विदेश नीति में निम्न परिवर्तन देखे जा सकते हैं।

① पड़ोसी पहले (Neighbourhood first)

② विश्व में भारत के प्रति प्रत्यक्षण में परिवर्तन (Image building)

भारत को विश्व के बेहतर बाजार के रूप में प्रस्तुत किया गया, निर्णय त्वरित रूप में लेकर प्रशासनात्मक जटिलता को कम किया गया। परिणामस्वरूप जापान, जर्मनी, अमेरिका, चीन से निवेश में वृद्धि हुयी और वैश्विक आतंकवाद के मुद्दे पर भी सऊदी अरब, U.A.E., जर्मनी, जापान, अमेरिका जैसे देशों ने आतंकवाद के मुद्दे पर भारतीय दृष्टिकोण का समर्थन किया व कहीं न कहीं भारत को वैश्विक महाशक्ति के रूप में चित्रित किया गया।

③ विदेश नीति में गैर परम्परागत तरीकों का प्रयोग

- पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित सीमा-पार आतंकवाद को नियंत्रित करने के लिए पहली बार आक्रामक रणनीति का प्रयोग किया गया तथा पाकिस्तान के अन्दर आतंकी कैम्पों पर सर्जिकल स्ट्राइक की गयी।
- चीन की समुद्री सिल्क परियोजना का समर्थन नहीं किया गया।
- रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता लाने के लिए तथा Make in India कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए रक्षा उत्पादन में सामरिक सहभागिता के विचार को बढ़ावा दिया गया जिसके अन्तर्गत भारत की बड़ी निजी कम्पनियों के साथ विदेशी कम्पनियों की साझेदारी को बढ़ाकर हथियार उत्पादन में प्रगति दर्ज की जा सकती है।
- यह उल्लेखनीय है कि रक्षा क्षेत्र में पहले ही प्रत्यक्ष विदेशी निवेश FDI लाने का रास्ता साफ कर दिया गया है इसके बावजूद रक्षा क्षेत्र में अपेक्षित निवेश नहीं हो सकता अतः सरकार ने सामरिक सहभागिता के सिद्धान्त का निर्माण किया।
- भारत वर्तमान में विश्व का सबसे बड़ा हथियार आयातक देश है भारत के रक्षा आवश्यकता का लगभग 65% भाग अभी भी आयात पर निर्भर है जो राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए एक गम्भीर चुनौती है।
- इस प्रवृत्ति को परिवर्तित करने के लिए रक्षा उत्पादन में लाइसेंस देने का कार्य (DIPP) गृहमंत्रालय से हटाकर वाणिज्य मंत्रालय को सौंपा गया है।
- सामरिक सहभागिता के अन्तर्गत लड़ाकू जेट, टैंक, परमाणु पनडुब्बी जैसे सैन्यशक्ति घातक हथियारों का निर्माण होगा।

• वर्तमान सरकार के द्वारा अप्रत्योप को भारत से जोड़ने पर, सरकार ने निर्णायक बल दिया।

• अमेरिका में मैडिसन स्क्वायर, आ० में सिडनी पार्क, तथा संयुक्त अरब अमीरात में भारतीय अप्रत्योप को प्रधानमंत्री द्वारा संबोधित किया गया

④ भारत की सॉफ्ट पावर को बढ़ाना (सांस्कृतिक कूटनीति)

• अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध सम्मेलन का आयोजन करके उन देशों के साथ सम्बन्ध सुदृढ़ करने का प्रयत्न किया गया जहाँ बौद्ध धर्म के अनुयायी बहुमत में है।

• अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस को बढ़ावा दिया गया तथा भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है जहाँ विश्व के सभी धर्मावलंबियों का निवास है और इतना बड़ा विविधता पूर्ण व बहुलतावादी देश विश्व में अन्यत्र नहीं है

निष्कर्ष

आलोचना

• विदेश नीति में यह प्रसिद्ध कहावत है कि मित्र का चयन किया जा सकता है पड़ोसी का नहीं।

यह संयोग का विषय है कि भारत के दो महत्वपूर्ण पड़ोसी चीन एवं पाकिस्तान के साथ भारत के सम्बन्ध लगातार तनावपूर्ण बने हुये हैं।

निष्कर्ष

• वर्तमान सरकार के द्वारा विदेश नीति में गतिशीलता का निर्माण किया गया है यह प्रो-एक्टिव है, तथा निर्णय भी त्वरित रूप में लिये जा रहे हैं परन्तु विदेश नीति में उपरोक्त परिवर्तन गुणात्मक न होकर मात्रात्मक प्रतीत होते हैं। क्योंकि गुणा० परिवर्तन

1991 के बाद हुआ।

• रक्षा नीति (नवीन रक्षा सिद्धान्त)

◦ सुरक्षा की चुनौतियाँ

◦ नये सैन्य सिद्धान्त के अन्तर्गत भारत के समक्ष विद्यमान सुरक्षा की वर्तमान चुनौतियों का उल्लेख किया गया है। भारत की पश्चिमी और उत्तरी सीमा पर सुरक्षा की चुनौती पाकिस्तान चीन से प्राप्त होती है तथा हिन्द महासागर में महाशक्तियों की बढ़ती दखल एवं भारत के अंदर माओवादी समस्या, कश्मीर में जारी छद्म युद्ध (Proxy war) तथा भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्रों में सुरक्षा चुनौतियाँ बनी हुयी है।

◦ उपाय (सुझाव)

◦ इस सिद्धान्त में युद्ध के नये खतरों का सामना करने के लिए नयी रणनीतियों पर बल दिया गया इसीलिए अंतरिक्ष क्षेत्र की सुरक्षा, साइबर सुरक्षा पर विशेष बल दिया गया है जो सुरक्षा की गैर परम्परागत चुनौती है।

◦ सिद्धान्त में यह उल्लिखित है कि आसूचना की तीनों इकाइयों के बीच (RAW, MI, IB) बेहतर समन्वय व सामंजस्य होना चाहिए।

◦ सैनिक सिद्धान्त में यह भी सुझाव दिया गया है कि भारत में सेना के तीनों इकाइयों की संयुक्त Wing का निर्माण होना चाहिए। (Tri-Service Command) जिसे थियेटर कमांड भी कहा जाता है।

जिसके अनुसार सेना के तीनों इकाइयों का एक पदाधिकारी होगा जिससे रक्षा संयुक्त संचालन बेहतर हो जायेगा क्योंकि तीनों के बीच

समन्वय व सामंजस्य होगा।

- भारत के लिए तीन थियेटर कमांड के निर्माण का सुझाव दिया गया है।

यह उल्लेखनीय है, कि भारत में वर्ष 2001 में अंडमान निकोबार द्वीप समूह के लिए थियेटर कमांड स्थापित किया जा चुका है। (एकीकृत कमांड)

- एकीकृत कमांड के गठन में समस्यायें

• आलोचकों के अनुसार भारतीय सैन्य व्यवस्था में वायुसेना की संख्या कम है और एकी० कमान के निर्माण से वायु सेना के प्रभावी प्रयोग में और समस्यायें विद्यमान होंगी।

- आलोचकों का मानना है कि भारत में आर्मी की संख्या सबसे ज्यादा है इसलिए एकीकृत कमान के निर्माण में आर्मी का प्रभाव बढ़ जायेगा। जिससे वायु सेना, आर्मी व नौसेना के बीच अधिक प्रतिस्पर्धा बढ़ेगी।

० एकीकृत कमान की स्थापना में एक व्यावहारिक समस्या भी है क्योंकि नेवी की भूमिका देश की अन्दर की सुरक्षा के लिए नहीं है बल्कि बाह्य समुद्री सुरक्षा के लिए तैनात किया जाता है।

० निष्कर्ष

० 1999 के कारगिल संघर्ष में तीनों सेनाओं के बीच समन्वय एवं सांमजस्य के अभाव के कारण अत्यधिक जटिलता उत्पन्न हुयी इसीलिए एकीकृत कमान सैन्य संचालन के लिए एक बेहतर रणनीति है।

Question 01

"भारत के समक्ष विद्यमान सुरक्षा की नयी चुनौतियों का विश्लेषण कीजिए। और क्या सैनिक सिद्धान्त इन चुनौतियों का सामना करने में किस सीमा तक सफल होगा, आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।"

Question 02

"भारतीय सरकार के हाथ शस्त्र उत्पादन के लिए निर्मित सामरिक सहभागिता के महत्त्व का आलोचनात्मक परीक्षण करें।"

Question 03

"गुजराल सिद्धान्त का पड़ोसी देशों के साथ संबंध निर्माण में उपयोगिता को स्पष्ट कीजिए।"

Question 04

" नये है 02 को स्पष्ट करें (गु०प्र०2) क्या आप इस मत से सहमत हैं कि गुट निरपेक्ष विदेश नीति अभी भी प्रासंगिक है।"

० भारत और श्रीलंका

- श्रीलंका का भारत के लिए महत्व
- श्रीलंका भारत के पड़ोसी देश के साथ हिन्द महासागर में अवस्थित एक महत्वपूर्ण देश है जो समुद्री संचार मार्ग पर स्थित है।
- भारत का अंतर्राष्ट्रीय व्यापार श्रीलंका के पत्तनों से संचालित होता है। (Trans Shipment facility)
- श्रीलंका भौगोलिक रूप में भारत का निकटस्थ पड़ोसी है इसलिए चीन का श्रीलंका में बढ़ता सामरिक प्रभाव भारत की सुरक्षा हितों के लिए प्रतिकूल माना जाता है।
- भारत श्रीलंका के बीच द्विपक्षीय व्यापार में भी वृद्धि हो रही है। दोनों के बीच में $4.5 Billion का द्विपक्षीय व्यापार है
- भौगोलिक एवं सांस्कृतिक निकटता के कारण श्रीलंका की आंतरिक नृजातीय संघर्ष का सीधा प्रभाव भारतीय सुरक्षा पर पड़ता है।

० भारत श्रीलंका के बीच संघर्ष की पृष्ठभूमि

० आजादी
⇓
श्रीलंका में नागरिकता अधिनियम
⇓
भारतीय तमिलों की नागरिकता समाप्त

② ब्रिटिश शासन - श्रीलंका - 3 Language (Eng., Singhali, Tamil)
⇓
आजाद - नीति भाषायी अधिनियम में केवल सिंहली भाषा, आधिकारिक
⇓
तमिल भाषा के कारण, प्रशासनिक स्तर पर बाहर प्रतिनिधित्व से

सरकार की भेदभाव पूर्ण नीति के तमिल का शान्तिपूर्ण विरोध

↓

दमन

↓

LTTE का उदय

↓

पृथक राज्य की माँग (ईलम) EIILM

हिंसात्मक रूप में पृथक राज्य लेने का प्रयास

↓

श्रीलंका ने 90s में America, Pak के साथ गुट बनाया

↓

भारत ने LTTE का समर्थन किया (प्रभाकरण)

↓

गृहयुद्ध

↓

राजीव गाँधी की श्रीलंका यात्रा

↓

LTTE द्वारा राजीव गाँधी की हत्या

↓

भारत द्वारा LTTE, आतंकी संगठन घोषित

↓

2008 - LTTE खत्म

श्रीलंका की नृजातीय समस्या (Ethnic conflict)

- श्रीलंका में विद्यमान नृजातीय समस्या के समाधान के लिए 1987 में राजीव - जयवर्द्धने समझौते सम्पन्न किया गया था जिसे श्रीलंकाई संविधान में 13वें संशोधन के रूप में शामिल किया गया।

- इस संशोधन के अन्तर्गत श्रीलंका के एकात्मक शासन में 09 प्रान्तीय सरकारों के गठन का प्रावधान किया गया। और उन्हें शासन के अनेक स्थानीय विषय - शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन, भूमि, पुलिस सौंपने / हस्तांतरित

करने का प्रावधान किया गया।

- श्रीलंका का दृष्टिकोण 13वें संविधान संशोधन के प्रति

- श्रीलंकाई सरकार का मानना है कि तमिल क्षेत्रों के पुनर्वास तथा विकास सबसे बड़ी प्राथमिकता है और नृजातीय समस्या अब नहीं रही।
- श्रीलंकाई सरकार ने यह आश्वासन दिया है कि तमिलों के नरसंहार करने वाले दोषी व्यक्तियों को दण्डित किया जायेगा।

- तमिलों का दृष्टिकोण

- तमिल अभी भी 13वें Amendment को पूर्ण रूप में लागू करने की माँग कर रहे हैं क्योंकि केन्द्रीय सरकार के द्वारा भूमि एवं पुलिस का विषय प्रान्तीय सरकारों को हस्तान्तरित नहीं किया गया है।

- तमिलों के अनुसार आर्थिक विकास सांस्कृतिक स्वायत्तता का विकल्प नहीं है। और तमिल अभी भी भेदभाव की शिकायत करते हैं व तमिलों के नरसंहार की अंतर्राष्ट्रीय एजेन्सियों से जाँच कराने की माँग कर रहे हैं।

- भारत का दृष्टिकोण

- श्रीलंका के साथ सम्बन्ध निर्माण में भारत को दोहरी चुनौती का सामना करना पड़ता है-

(a) तमिलनाडु के तमिलों की भावनाओं को ध्यान में रखना

(b) श्रीलंका में चीन पाकिस्तान के बढ़ते प्रभाव को संतुलित करना

इसलिए भारत तमिल क्षेत्रों के विकास व पुनर्वास के लिए आर्थिक सहायता प्रदान कर रहा है। भारत ने 13वें Amen

के पूर्ण क्रियान्वयन की माँग की है, परन्तु भारत श्रीलंका पर अतिरिक्त दबाव डालने से परहेज करता है क्योंकि श्रीलंका के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप श्रीलंका में चीन के प्रभाव को बढ़ाने में सहायक होगा। भारत का यह भी मानना है कि 50K तमिल शरणार्थी अभी भी तमिलनाडु में निवास कर रहे हैं। इसलिए तमिल समस्या भारत की भी समस्या है।

निष्कर्ष

- श्रीलंकाई सरकार श्रीलंका के आर्थिक विकास के लिए चीन और भारत दोनों के साथ सुदृढ़ आर्थिक सम्बन्ध बनाने पर बल दे रही है।
- श्रीलंका की चीन पर अति निर्भरता की नीति श्रीलंका के लिए व्यावहारिक नहीं होगी क्योंकि श्रीलंका चीन के कर्ज के बोझ से पहले से ही त्रस्त है। व श्रीलंका का चीन के प्रति अति झुकाव भारत-श्रीलंका व श्रीलंका - अमेरिका दोनों सम्बन्धों को प्रतिकूल रूप में प्रभावित करेगा
- भारत, चीन- श्रीलंका सम्बन्धों का विरोधी नहीं है अपितु चीन - श्रीलंका के बीच बढ़ते सामरिक सम्बन्धों को लेकर चिन्तित है, इसलिये चीन- श्रीलंका का सम्बन्ध भारतीय हितों का विरोधी नहीं होना चाहिए और भारत की सुरक्षा चिंताओं को ध्यान में रखते हुए श्रीलंका ने चीनी परमाणु पनडुब्बियों को श्रीलंका में प्रवेश पर प्रतिबन्ध लगा दिया।

- भारत - श्रीलंका सम्बन्धों को और सुदृढ़ बनाने के उपाय

① Elder Brother - सहायक
② Big Brother - हस्तक्षेप, निर्देश, बाध्य करे

- भारत को अपने छोटे पड़ोसी देशों की एकतरफा सहायता व छूट देने का प्रयास करना चाहिए जैसा कि गुजराल सिद्धान्त में कहा गया था
- भारत - श्रीलंका के बीच विद्यमान साझे सांस्कृतिक सम्बन्धों को और शक्तिशाली बनाने का प्रयास करना चाहिए इसीलिए P.M. Modi

के द्वारा बौद्ध सम्मेलन में सहभागिता की गयी।

- श्रीलंका की तमिल समस्या के समाधान में भी भारत की सकारात्मक भूमिका होनी चाहिए, इसीलिए श्रीलंका जैसे छोटे पड़ोसी देशों की भावनाओं का सम्मान करते हुए उनके प्रति "एल्डर ब्रदर" का दृष्टिकोण रखना चाहिए, Big Bro. का नहीं।

- भारत-श्रीलंका के बीच भौगोलिक-सांस्कृतिक-आर्थिक सम्बन्ध अत्यन्त घनिष्टतापूर्ण हैं और राजनैतिक मतभेद में मुख्य प्रत्यक्षण (Sou. Perception) में व्याप्त भिन्नता से संघर्ष उत्पन्न होते हैं। जिसका पहलकारी नीति के द्वारा समाधान किया जा सकता है।

Question ① "भारत-श्रीलंका के बीच विद्यमान मछुआरे की समस्या पर प्रकाश डालिये। क्या आप इस मत से सहमत हैं कि यह समस्या दोनों देशों के बीच विद्यमान राजनैतिक मतभेदों और मुख्य प्रत्यक्षण में विद्यमान भिन्नता का उत्पाद है?"

Question ② "भारत-श्रीलंका के बीच निकटतम सांस्कृतिक भौगोलिक सम्बन्ध एवं आर्थिक अन्तर्निर्भरता के बावजूद नृजातीय संघर्ष दोनों के बीच विद्यमान विवाद के प्रमुख कारण रहे हैं।"

Question ③ "क्या आप इस मत से सहमत हैं कि भारत श्रीलंका सम्बन्धों के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में चीन एक प्रमुख कारक बनता जा रहा है। श्रीलंका में चीन के बढ़ते प्रभाव को सीमित करने के लिए भारत किन उपायों को अपना सकता है।"